Gyanvividha, Vol.-2; Issue-1 (January-March) 2025 : PP-107-109

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-2; Issue-1 (Jan.March) 2025
Page No.- 107-109
©2025 Gyanvividha
www.journal.gyanvividha.com

निरुपमा तिवारी
सहायक प्राध्यापक, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय स्याल्दे, अल्मोड़ा (उत्तराखंड).

Corresponding Author :

निरुपमा तिवारी
सहायक प्राध्यापक, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय स्याल्दे, अल्मोड़ा (उत्तराखंड).

हिंदी कविता में विज्ञान दर्शन

विज्ञान वर्तमान जीवन की आवश्यकता है। मानव जीवन को उन्नति, प्रगति, विकास के पथ पर ले जाने वाला विज्ञान ही है। आज जब जीवन का प्रत्येक क्षेत्र विज्ञान से प्रभावित है तो फिर कविता इससे प्रभावित नहीं हो, यह कैसे हो सकता है? जिस चांद को कवि अपनी सौंदर्य चेतना की अभिव्यक्ति के लिए उपमानों के रूप में प्रयुक्त करते रहे हैं; उस चांद के वास्तविक स्वरूप को आज विज्ञान ने इस पूरी दुनिया के सामने प्रस्तुत कर दिया है। इसलिए वर्तमान समय के कवि अपने काव्य में प्रतीकों का प्रयोग करते समय वैज्ञानिक ज्ञान और तार्किकता का ध्यान रखने लगे हैं। हिंदी कविता में विज्ञान की अभिव्यक्ति किस रूप में की जा रही है इसे जानने से पहले हमें यह जानना आवश्यक है कि कविता और विज्ञान में क्या समानता और विषमताएं हैं। समानता की दृष्टि से यदि विचार किया जाए तो केवल एक ही समानता हमें देखने को मिलती है कि विज्ञान के आविष्कार और कवि की कविता; इन दोनों का ही जन्म किसी प्रेरणा के फलस्वरुप होता है। संसार के सभी महत्वपूर्ण आविष्कार किसी वैज्ञानिक के भीतर किसी प्रेरणा की परिणीति का परिणाम हैं। इसी प्रकार महान काव्य की रचना भी कवि के भीतर किसी महान प्रेरणा की अभिव्यक्ति का ही फल है। अन्यथा विज्ञान और कविता में पर्याप्त भिन्नता दिखाई पड़ती है। कविता का संबंध जहां हृदय की अनुभूतियों से है वहीं विज्ञान का संबंध तथ्यों से और तथ्यों की प्रमाणिकता से है। विज्ञान में वैज्ञानिक भौतिक सत्य की खोज करता है, जबकि कविता का संबंध आत्मा की खोज करने से होता है। किंतु यदि हम ध्यान पूर्वक विश्लेषण करें तो ऊपरी तौर पर दोनों के ही कार्य क्षेत्रों में पर्याप्त असमानताओं के होते हुए भी कविता और विज्ञान दोनों का ही उद्देश्य मानव सेवा का विस्तार है। यही कारण है कि वैज्ञानिक चेतना से संपन्न अनेक कवि अपनी रचनात्मकता और समयानुकूल सतर्कता से विज्ञान को कविता में स्थान देने का महत्वपूर्ण कार्य करने लगे हैं।

एक उत्कृष्ट कवि में यह सामर्थ्य होती है कि वह अपनी प्रतिभा के आधार पर सत्यम शिवम सुंदरम के दर्शन करा सकता है। उत्कृष्ट कविता नैतिकता की पक्षधर होती है, जबकि विज्ञान का उद्देश्य सत्य का साक्षात्कार कराना और उस पर तटस्थ रहना है। विज्ञान नैतिकता के संबंध में कोई बात नहीं करता है। परिणाम स्वरुप जहां विज्ञान ने मनुष्य के जीवन में सुविधाओं में वृद्धि की है वहीं इनके कुछ दुष्परिणाम भी मानव समाज को झेलने पड़े हैं। विज्ञान के इन दोनों ही पक्षों का साक्षात्कार हिंदी के कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से कराने का प्रयास किया है।

हिंदी कविता में विज्ञान के दर्शन काफी समय पहले से ही दिखाई पड़ने लगे थे। छायावादी कविता के प्रवर्तक जयशंकर प्रसाद ने अपने महाकाव्य कामायनी में के एक अंश में विज्ञान की सत्ता तथा उसके प्रभाव को निम्न पंक्तियों के माध्यम से व्यक्त किया है-

"विज्ञानमयी अभिलाषा, पंख लगा कर उड़ने को
जीवन की असीम आशाएं कभी न नीचे मुड़ने को।
अधिकारों की सृष्टि और उनकी वह मोहमयी माया,
वर्गों की खाई बन फैली कभी नहीं जो जुड़ने की।"[1]

सच-सच ही है कि आज मनुष्य की इच्छाएं विज्ञान के विकास के समान निरंतर बढ़ती जा रही हैं; फिर चाहे इसके परिणामस्वरूप मानवीय संबंधों में कितनी ही दूरी आ जाए। उसे सब सहज स्वीकार्य है। वैज्ञानिक आविष्कार मानव जीवन को सुख सुविधाओं से संपन्न करते हैं। उपभोक्तावादी प्रवृत्तियों का विस्तार करते हैं; लेकिन उन स्थितियों,उन सुखों का स्थान नहीं ले सकते जो मानव जीवन से प्राकृतिक रूप से जुड़े होते हैं। इसी बात को स्वीकार करते हुए हिंदी के सुप्रसिद्ध प्रयोगवादी कवि केदारनाथ सिंह अपनी कविता 'विज्ञान और नींद' में कहते हैं :-

"जब ट्रेन पर चढ़ता हूं
तो विज्ञान को धन्यवाद देता हूं
वैज्ञानिक को भी।
जब उतरता हूं वायुयान से
तो ढेरों धन्यवाद देता हूं विज्ञान को
और थोड़ा सा ईश्वर को भी
पर जब बिस्तर पर जाता हूं
और रोशनी में नहीं आती नींद
तो बत्ती बुझाता हूं
और सो जाता हूं
विज्ञान के अंधेरे में अच्छी नींद आती है।"[2]

चिकित्सा के क्षेत्र में विज्ञान ने क्रांतिकारी परिवर्तन किए हैं। चिकित्सा के क्षेत्र में जटिल से जटिल बीमारियों का समाधान विज्ञान की ही देन है। डीएनए, विज्ञान की एक ऐसी खोज है जिसने जीवन के अनेक अनसुलझे रहस्यों को खोलने का कार्य किया है। विज्ञान की इसी विलक्षण खोज को 'पद्म विभूषण डॉ विंदेश्वरी पाठक' ने डीएनए पर आधारित अपनी कविता में उकेरने का प्रयास किया है-

"जब विज्ञान के विस्तृत आकाश में
अनुवांशिकी ने फैलाया अपने डैनों को
लोगों ने तब पहचान इस डीएनए को
कोशिकाओं के केंद्रक में स्थित जो यह जैविक कृति है
उसी में समाहित यह सारी जैविक प्रकृति है
प्राणियों और वनस्पतियों का जो रूप रंग आकार है
आचरण और व्यवहार है
डीएनए ही इन सब का आधार है।"[3]

कोरोनाकाल के आतंक को पूरी दुनिया झेला। कोरोना ने विश्व का कोई भी कोना ऐसा नहीं छोड़ा जहां ऑक्सीजन की कमी ना हुई हो।उस समय विज्ञान ने ही बीमारों के लिए ऑक्सीजन की पूर्ति करने का कार्य किया। ऑक्सीजन जीवन में कितनी अधिक महत्वपूर्ण है; मंगलेश डबराल ने अपनी कविता 'घटती हुई ऑक्सीजन' के माध्यम से इस बात को सामने लाने का प्रयास किया है-

"दुनिया में ऑक्सीजन कम हो रही है
कभी ऐन सामने दिखाई दे जाता है कि वह कितनी
तेज़ी से घट रही है
.....बढ़ रहे हैं नाइट्रोजन सल्फ़र कार्बन के ऑक्साईड
और हवा में झूलते अजनबी और चमकदार कण

बढ़ रही है घृणा दमन प्रतिशोध और कुछ चालू क़िस्म की खुशियां
चारों ओर गर्मी, स्प्रे की बोतलें और खुशबूदार फुहारें
बढ़ रही हैं।"[4]

साहित्य के अंतर्गत कविता का सीधा संबंध भावनाओं और अनुभूतियों से होता है। साहित्य में भावनाओं के साथ-साथ जीवन-यथार्थ की अभिव्यक्ति भी होती है। विज्ञान के ऐसे दुष्परिणाम जिन्होंने मानव समाज को कलंकित किया है; उस पर संवेदनशील कवियों ने विलाप किया है। चिकित्सा के क्षेत्र में अविष्कारों ने जहां जीवन प्रत्याशा में वृद्धि की है वहीं इन आविष्कारों के प्रयोग द्वारा सैकड़ो अजन्मे शिशुओं के जीवन को गर्भ में ही समाप्त कर दिया जा रहा है। विज्ञान से जुड़े इस अमानवीय यथार्थ को 'दिनेश उपाध्याय' ने अपनी कविता 'हत्या और आत्महत्या के खिलाफ' में इस प्रकार से बयां किया है-

"गर पता चल जाए पराश्रव्य ध्वनि यंत्र द्वारा
की औरत के पेट में है औरत
तो मार दी जाती है औरत
खुशियां मर जाती हैं
जब एक औरत के पेट से पैदा होती है औरत।"[5]

निष्कर्ष : उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि वर्तमान समय की कविता वैज्ञानिक तथ्य, वैज्ञानिक सत्य और वैज्ञानिक सोच के निकट जा रही है। यूं तो कविता का संबंध भावना और अनुभूतियों से होता है और उसका वर्ण्य विषय भी वही तत्व और तथ्य बना करते हैं जो भावना और विचार के क्षेत्र में आते हैं। इसके विपरीत विज्ञान उन्हीं विषयों का अध्ययन करता है जिन्हें भौतिक रूप से मापना संभव होता है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि विज्ञान का संबंध जीवन के यथार्थ से है, जबकि वहीं कविता में भावना और अनुभूति के साथ-साथ कल्पना और यथार्थ को समाहित करने का पर्याप्त अवसर रहता है । इसलिए भले ही विज्ञान में कविता के लिए स्थान ना हो लेकिन कविता में विज्ञान से जुड़े यथार्थ की अभिव्यक्ति के लिए पर्याप्त स्थान रहता है। आज विज्ञान ने आधुनिक हिंदी कवियों को वह संतुलित दृष्टि प्रदान की है जिसके आधार पर वे हर बात को सही और उचित मानवीय परिपेक्ष में परख कर जीवन और समाज को नई जीवन -दृष्टि देने का कार्य कर पा रहे हैं। यही कारण है कि हिंदी के कवि विज्ञान की इस दुनिया में उससे जुड़े यथार्थ को अपनी कल्पना और रचनात्मकता के साथ प्रस्तुत कर रहे हैं और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाते हुए उन सभी रुढ़ियों और परंपराओं को अपनी कविता से दूर कर रहे हैं जिन्हें मानव विकास का गति अवरोधक माना जा सकता है।

संदर्भ सूची :

1. जयशंकर प्रसाद. 'कामायनी'. हिंद पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड. चोपड़ा प्रिंटर, मोहन पार्क शाहदरा: प्रथम संस्करण-1988.पृष्ठ संख्या 92.
2. केदारनाथ सिंह. 'सृष्टी पर पहरा'. राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड. प्रथम संस्करण 2014.
3. https://www.youtube.com/live/VfpJLIvpLVg?feature=shared
4. https://www.jakhira.com/2021/05/ghatti-hui-oxygen.html#ixzz8T1K38F
5. दिनेश उपाध्याय. "हत्या और आत्महत्या के खिलाफ "उत्तर महिला पत्रिका. तल्ला डांडा नैनीताल, उत्तरा प्रकाशन, जुलाई- सितंबर 1994.

•